बाबूराम शर्मा विभाकर

जल सम्बन्धी दोहे

जल से ही तो सृष्टि है, सृष्टि हुई विख्यात,
उसका कारण सूर्य है, बनते हैं दिन-रात।
जल से ही जीवन सधा, जल की ही औकात,
बिन जल के क्या हो सके, जल जीवन-संघात।
मंगल पर भी खोजते, पानी यदि मिल जाय,
वहीं बसेंगे आप हम, जीवन कलि खिल जाय।
जल से ही जंगल हुआ, लतिका हो या वृक्ष,
जड़ी-बूटियाँ सब मिलें लाभ मिलेंगे लक्ष।
बदरा जल बरसाय दे, हुई उमस यह खूब,
प्यास-प्यास की दुर्गती, बढ़ी बहुत ही ऊब।
जल न मिला तो हो गया, निर्जल रेगिस्तान,
जल की मात्रा बढ़ गई, आप्लावित संधान।
जल में मछली यों तिरी, गजब करे वह खेल,
मुख में भर पानी अहा, देती तभी उड़ेल।
भू के भीतर जल हुआ, भू पर भी जल देख,
आसमान में जल ठहर, बादल का उल्लेख।
मेघों से बनती तड़ित, विद्युत जो कहलाय,
उसका कारण है घृर्षण, तड़-तड़ शोर मचाय।
नद का जल बहता हुआ सागर तक आ जाय,
सागर से फिर मेघ बन, बरसे नभ में छाय।
कभी-कभी वर्षांत पर, मिले सूर्य की धूप,
सात रंगों का इन्द्रधनु, होता सृजित अनूप।
हिम पिंघला है सूर्य से, नद स्वरूप ढल आय,
गंगा-जमुना-नर्मदा, सभी नदी बन जाय।
संस्कृति और सुसभ्यता, नद का आंचल होय,
जल की ही शुचि भूमिका, हर्ष सदा जो बोय।
जल-विद्युत जल से सृजित, आहा हुआ कमाल,
मानव की श्री सभ्यता, आलोकित तत्काल।
हीरा स्वर्ण सब धातुएँ, जलाग्निक संयोग,
सभी मुखर भूगर्भ में, पाते उनका भोग।
मोती-सीपी-शंख को, सागर जल से पाय,
जल-जीवाणु से सदा, ये निर्मित हो जाय।
जल से ही आभा बने, श्रृंगारिक संसार,
जीवन के सौंन्दर्य में, वानस्पतिक आधार।

आसमान में छाते बादल,
सबकी प्यास मिटाते बादल।
बरस-बरस कर छम-छम-छम,
अपनी ऐंठ दिखाते बादल।
धूम धड़क्का बिजली चमके,
घोर-घोर कर बरसे बादल।
हम बादल मतवाले हैं जी,
बहुत खुशी है हरषे बादल।
कभी-कभी नखलिस्तानों में,
बाढ़ सरीखी लाते बादल।
हाय राम! अब बंद करो जी,
किन्तु नहीं शरमाते बादल।
बादल रखते बहुत हेकड़ी,
निज मनमानी करते बादल।
पानी की जो बाढ़ बनाते,
उसमें कार बहाते बादल।
ऐ मानव, अभिमान न करना,
तुझको सीख सिखाते बादल।
उनके माध्यम परमेश्वर जो,
अपने रंग दिखाते बादल।
बादल ही हैं जीवनदाता,
हरियाली ला देते बादल।
दया धर्म दिखला जीवों पर,
खूब प्रशंसा पाते बादल।
खुशियों की चिट्ठी लाने में,
मेघदूत बन जाते बादल।

संपर्क करें:
बाबूराम शर्मा विभाकर
52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद-201 001
मो. 9350451497